ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 236-239
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

21वी शताब्दी में भारत की विदेश नीति

डॉ0 दीप कुमार श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर– रक्षा अध्ययन विभाग, एस0 एम0 कालेज चन्दौसी– सम्भल, (उ0प्र0), भारत

Received- 04.03.2022, Revised- 07.03.2022, Accepted - 11.03.2022 E-mail: deep_srivastava76@yahoo.com

सारांशः – ***एक देश की विदेश नीति, विश्व राजनीति का वह सैद्धांतिक पहलू है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को निर्धारित करता है। व्यवहारिक दृष्टि से विदेश नीति राष्ट्रीय एंव अंतर्राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने का एक साधन है, जो कि राष्ट्रों के परस्पर संबंधों का संचालन करता है। इसीलिए विभिन्न राष्ट्रों की व्यवहारिक प्रकिया ही विदेश नीति है। किसी देश की विदेश नीति का लक्ष्य राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति उनकी पूर्ति एंव रक्षा करना होता है। देश का आंतरिक विकास, आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा, सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाना, राष्ट्र शक्ति में वृद्धि अंतर्राष्ट्रीय सम्मान की प्राप्ति विश्व शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के साथ–साथ धार्मिक एंव सांस्कृतिक उद्देश्यों की प्राप्ति विदेश नीति के प्रमुख आधार हैं। प्रायः सभी देशों की विदेश नीति स्थायी एंव गतिशील कारकों द्वारा निर्धारित होती है। स्थायी कारकों में देश को भू–राजनीतिक स्थिति, प्राकृतिक व खनिज सम्पदा, देश की सांस्कृतिक परम्पराएं, ऐतिहासिक अनुभव, दार्शनिक दृष्टिकोण, राजनैतिक मान्यताएं, सैनिक क्षमता, आर्थिक क्षमता एंव राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय हित तथा गतिशील कारकों में देश की आंतरिक स्थिति, तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां, व्यक्तित्व एंव नेतृत्व, विज्ञान और तकनीकी विकास, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व एंव विश्व शांति, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरोध की नीति, रंगभेद एंव नस्लवाद के विरोध की नीति, संयुक्त राष्ट्र संघ में आस्था एंव राष्ट्रमण्डल की सदस्यता, संयुक्त राष्ट्र में भूमिका आदि की उपेक्षा नहीं की जा सकती।***

कुंजीभूत शब्द– विदेश नीति, विश्व राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, व्यवहारिक दृष्टि, संचालन, राष्ट्रीय हितों ।

1– प्रस्तुत शोधपत्र "21वी शताब्दी में भारत की विदेश नीति की चर्चा करने से भारतीय विदेश नीति के बारे समझना आवश्यक है। जिसके लिए यह आवश्यक है कि भारतीय विदेश के सिद्धान्तों तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जाए।

भारतीय विदेश नीति में शुरू से ही गतिशीलता रही है। जैसे–जैसे भारत के राष्ट्रीय हितों में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन आया, विदेश नीति का स्वरूप भी बदलता गया। भारतीय विदेश नीति के उद्भव का कोई प्रामाणिक तथ्य प्राप्त नहीं है। उसका वास्तविक मूल्यांकन करने के लिए भारतीय विदेश नीति के विकास पर दृष्टिपात करना जरूरी है। भारत की विदेश नीति की गतिशीलता को समझने के लिए ऐतिहासिक तत्वों का सावधानीपूर्वक विवेचन आवश्यक है। भारतीय विदेश नीति के कुछ प्रमुख सिद्धान्तों व उद्देश्यों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है–अंतर्राष्ट्रीय नीति और सुरक्षा के लिए हरसंभव प्रयत्न करना, राष्ट्र की समृद्धि एंव विकास, भारतीय विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य हैं। भारत को दक्षिण एशिया में शक्ति के रूप में स्थापित करना तथा एशिया को महाशक्ति के रूप में उभारना, अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा निपटाए जाने की नीति को प्रत्येक संभव तरीके से प्रोत्साहन देना, अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रति और विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों में संधियों के पालन के प्रति आस्था बनाए रखना, सभी राज्यों और राश्ट्रों के बीच परस्पर सम्मानपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना, उपनिवेशवाद/साम्राज्यवाद एंव जातिगत भेद–भाव के खिलाफ संघर्ष करना एंव विश्वशांति के लिए जनमत तैयार करना, अफ्रीकी, एशियाई देशों के साथ सहयोग एंव परस्पर सहमति को बढ़ावा देना, सभी प्रकार के उपनिवेशवाद का विरोध करना, सैनिक गुटबंदियों और सैनिक समझौतों से अपने आपको अलग रखना तथा ऐसी गुटबंदी को निरूत्साहित करना, उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद से पीड़ित लोगों की सहायता करना, हर प्रकार की साम्राज्यवादी भावना को निरूत्साहित करना, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एंव ग्रुप ऑफ–77 को नेतृत्व प्रदान करना, संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपनी भूमिका को व्यापक बनाना, नाभिकीय एंव आणविक हथियारों के निर्माण एंव उपयोग का विरोध करना, निःशस्त्रीकरण की दिशा में किए गए प्रयासों को प्रोत्साहित करना, क्षेत्रीय सहयोग की वृद्धि करना और नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढावा देना। दुनिया के तेजी से बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य के साथ, भारत जैसे विकासशील देशों के लिए विकसित होती नई स्थितियों से साथ रतार बनाए रखना वाकई चुनौतीपूर्ण बनता जा रहा है।

2– 21 वी शताब्दी में भारत की विदेश नीति को समझने के लिए इसके 21 वी शताब्दी में विकास पर पहले चर्चा करना आवश्यक है।

21वी शताब्दी में भारत की विदेश नीति की बागडोर कांग्रेस और सहयोगी दलों के विपरीत अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व वाली एन0डी0ए0 के पास आ चुकी थी।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

गुजराल के बाद भारत की विदेश नीति का संचालन अटल बिहारी वाजपेयी ने किया। वाजपेयी ने भी 'गुजराल सिद्धान्त' से दो कदम आगे बढ़कर सभी पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को प्राथमिकता दी। वाजपेयी ने परमाणु नीति में परिवर्तन न करने की बात कही और 1998 में पॉच परमाणु परीक्षण किये। परन्तु इस सन्दर्भ में राष्ट्र की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए परमाणु विस्फोटों के बाद भारत ने परमाणु नीति की पुनः समीक्षा की बात की और परमाणु हथियार बनाने के विकल्प का इस्तेमाल करने की बात भी स्वीकार की। यद्यपि भारत द्वारा किये गये परमाणु विस्फोटों की विश्व समुदाय ने निन्दा की और अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये। परन्तु भारत ने बिना किसी दबाव के अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति का संचालन किया। भारत ने पाकिस्तान के साथ समसामयिक आधार पर सम्बन्ध स्थपित करने के लिए पहल की और 21 फरवरी 1999 को लाहौर घोशणा पत्र पर हस्ताक्षर किये। इसके तहत दोनों देशों ने पर्यटन व व्यापार को बढ़ावा दिया गया तथा दोनों देशों के बीच रेल, बस तथा हवाई सेवायें प्रारम्भ की गई। परन्तु मई 1999 में पाकिस्तान द्वारा कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके भारत के षान्ति प्रयासों को चुनौती दी। इस घुसपैठ का मुँहतोड़ जवाब देकर भारत ने अपना राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान बरकरार रखा। कारगिल विजय भारत की विदेश नीति की महत्वपूर्ण सफलता थी। विश्व के अधिकांश देशों ने भारत का ही पक्ष लिया। कारगिल युद्ध के बाद भारत–पाक सम्बन्धों में कटुता आ गई। उसके बाद 13 दिसम्बर 2001 में पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों ने भारत की संसद पर हमला कर दिया। इससे दोनों देशों के बीच और अधिक सम्बन्ध खराब हो गये। परन्तु मई, 2002 में भारत ने पाकिस्तान के साथ शांतिपूर्ण सम्बन्ध कायम करने की दिशा में पहल करते हुए लाहौर बस सेवा पुनः आरम्भ की। 21वीं शताब्दी में भारत की विदेश नीति की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बन गया और उसके नये देशों के साथ मधुर सम्बन्ध ा कायम हुए। मध्य एशियाई गणतन्त्रों के साथ व्यापार तथा राजनयिक सम्बन्धों सुधरे। वर्तमान मनमोहन सरकार ने भी अपने पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में पहल करने तथा नेहरू युग की विदेश नीति पर ही अमल करने की बात स्वीकार की है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के बाद अगले चुनाव में डॉ. मनमोहन सिंह भारत के ऐसे प्रधानमंत्री हुए जिन्होंने विदेश नीति को सुदृढ़ बनाने व भारत को मजबूती प्रदान करने के क्षेत्र में बहुत प्रयास किया, परिणामतः उन्हें विदेशी राष्ट्रों में भरपूर सम्मान मिला। इन्होंने श्री अटल जी की नीतियों को अग्रसारित करने का प्रयास किया तथा लाहौर बस सेवा की यात्रा सुविधा में बढोत्तरी की। और तो और पाक अधिकृत कश्मीर भी भारत से बस–सेवा द्वारा जुड़ गया। रेल सेवा भी दोनों देशों के मध्य आरम्भ हो गयी। भारत के इस मैत्रीपूर्ण रवैये का पाकिस्तान ने भी स्वागत किया और दोनों देशों के मध्य तनाव में भारी कमी आयी। पड़ोसी देशों के सम्बन्धों में भी काफी सुधार हुआ।

डॉ मनमोहन सिंह जुलाई 2005 में अमेरिका गये थे। राष्ट्रपति बुश से परमाणु समझौते को लेकर भी बातें हुई थीं। दोनों देशों के सम्बन्धों में डॉ. सिंह की इस यात्रा से कुछ सुधार अवश्य हुआ। परमाणु करार इतना प्रभावी रहा कि समस्त अमेरिका में एक विशेष प्रकार की नवीनता का आभास हुआ। भारत व अमेरिका के सम्बन्धों में बदलाव की रूप रेखा को जार्ज बुश ने स्वंय स्वीकार किया है। यह डॉ. मनमोहन सिंह सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। सामान्यतः अमेरिका की मानसिकता इतनी दूशित थी कि वह परमाणु प्रतिष्ठानों को द्विभाजित करने की रूपरेखा बना रहा था। अधिक से अधिक संयत्र नागरिक उपयोग के लिए तथा बिजली आदि बनाने के लिए हों और कम से कम प्रतिष्ठान बमों के निर्माण में सहायक हों तथा सम्पूर्ण ऊर्जा कार्यक्रम 'अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी' की निगरानी में रखा जाये, इसमें भारत को आपत्ति थी। परमाणु के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रयास किये गये। मार्च 2006 में जब रूस के प्रधानमंत्री का भारत में आगमन हुआ तो उन्होंने यह वादा किया कि रूस तारापुर परमाणु संयंत्र को यूरेनियम आपूर्ति करेगा। इस समझौते के कारण भारत व रूस की मित्रता की सापेक्षिक वृद्धि को बढ़ावा मिला। अतः इस प्रकार से रूस व अमेरिका दोनों के साथ मित्रता रखने में भारत की कूटनीति विचारधारा को पर्याप्त स्थान मिला।

21वी शताब्दी में प्रधानमंत्री मोदी की सरकार ने अपनी विदेश नीति में अच्छा काम किया है। पदभार संभालने के बाद से, प्रधानमंत्री ने कई प्रमुख देशों के साथ–साथ भारत के निकटतम पड़ोस में कई राष्ट्रों की यात्राओं के साथ विदेश नीति के एक जोरदार एजेंडे को आगे बढ़ाया हैं। भारत की विदेश नीति में जो जोश मोदी लेकर आए हैं क्या वह मूलभूत बदलाव को प्रतिबिंबित करता है या वे बदलाव महज ऊपरी हैं? यह सवाल साधारण से बहुत दूर है। एक ऐसे समय में जब चीन एक हठधर्मी विदेश नीति में लगा हुआ है, जब अमेरिका की पुनः संतुलन की रणनीति का भविष्य अस्पष्ट हैं और साथ ही अधिकांश मध्य–पूर्व लपटों में है, भारत के विदेश नीति संबंधी चुनावों का देश के समस्त भाग्य पर अच्छा खासा असर पड़ेगा। मोदी को अभी दुनिया के कुछ हिस्सों में विरोधी प्राथमिकताओं के साथ निपटने के लिए एक फ्रेमवर्क तैयार करना है। मोदी की विदेश नीति लंबे समय से चली आ रही विचारात्मक और ज्यादातर खोखली बयानबाजी से भी दूर रही है जो लंबे समय तक भारत की विदेश नीति की विशेषता थी। उन्होंने एक बार भी गुट–निरपेक्षता के सिद्धांत का उपयोग नहीं किया, उनहोंने वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

तत्काल आवश्यकता को लेकर कोई घिसा–पिटा बयान नहीं दिया। उनकी सरकार को अभी भी जहॉ उपाय कुशलता दर्शानी है वह है मध्य पूर्व के साथ भारत के संबंध। उन्होंने इजराइल के साथ सबंधों को कायम रखने और वास्तव में बढ़ाने में अपनी दिलचस्प बिल्कुल जाहिर कर दी है।

भारत को लेकर बदलते वैश्विक नजरिए के साथ और जिस तरह हम दुनिया को देखते हैं उसके साथ भारत के आर्थिक सुधारों की कायापलट हो गई। एनआरआई वर्ग ने हमारी अर्थव्यस्था के प्रबंधन को मजबूती और स्थिरता प्रदान की है। विश्व बैंक की 2014 की रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय विदेशी समुदाय की ओर से धन प्रेषण दुनिया में सबसे अधिक हैं जो 70 बिलियन डॉलर है। इसके बाद 64 बिलियन डॉलर और 28 बिलियन डॉलर के साथ क्रमशः चीन और फिलीपींस का नंबर आता है। विदेशी मुद्रा संकट की अवधियों के दौरान, नीति प्रबंधक पूँजी प्रवाह को बढ़ाने के लिए तथा इंडिया डिवेलपमेंट बॉन्ड व अन्य विशेष एनआरसी स्कीमों की सुरक्षित मार्केटिंग को सुरक्षित करने के लिए स्थिर रूप से एनआरआई समुदाय की ओर मुड़े हैं।

अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य बहुत तेजी से बदल रहा है। उसके अनुरूप अपनी नीतियों में फेरबदल करना भी आवश्यक हो जाता है। इसके लिए पर्याप्त लचीलेपन की आवश्यकता होती है। अतीत में भारतीय विदेश नीति में इसका एक प्रकार से अभाव दिखा, लेकिन मोदी सरकार की विदेश नीति व्यावहारिक मोर्चे पर पूरी तरह पारंगत दिखती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत के आस–पड़ोस में अक्सर अस्थिरता हावी रही। इस कारण भारत का रवैया भी प्रायः प्रतिक्रियात्मक रहा, परंतु मोदी सरकार में इस रीति–नीति में बदलाव आया है। प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति में पड़ोसियों को प्राथमिकता देने का जो सिलसिला शुरू हुआ, उसमें इन देशों को लेकर भारत की दृष्टि बदली है। विदेश नीति में आया यह बदलाव उपयुक्त एवं तार्किक है, क्योंकि सदा परिवर्तनशील विदेश नीति को किसी एक लकीर या सांचे के हिसाब से चलाया भी नहीं जा सकता। प्रत्येक मामले के हिसाब से अलग पत्ते चलने होंगे। तभी राष्ट्रीय हितों की पूर्ति संभव हो सकेगी। मोदी सरकार विदेश नीति की इसी व्यावहारिक राह पर चल रही है। हालिया कई मामलें इसकी पुष्टि करती हैं। कोरोना काल में अपने पहले विदेश दौरे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बीते दिनों बांग्लादेश गए। प्रधानमंत्री मोदी चाहते तो इस बार भी वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से संबंधित आयोजन में सम्मिलित हो सकते थे, मगर उन्होंने प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व का निर्णय किया। इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने दर्शाया कि भारत के लिए उसके पड़ोसी कितने अहम हैं। इससे पहले भी अपने प्रथम शपथ ग्रहण समारोह में मोदी ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ सहित दक्षेस के सभी नेताओं को आमंत्रित किया था। इतना ही नही अपने पहले विदेश दौर के लिए उन्होंने भूटान को चुना तो दूसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद वह पहली विदेश यात्रा पर मालदीव गए।

हमारे पड़ोस में इन दिनों म्यांमार बहुत अशांत है। वहॉ लोकतांत्रिक सरकार को अपदस्थ कर सैन्य शासकों ने फिर से कमान संभाल ली है। देश में लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के लिए विरोध–प्रदर्शन चल रहे है। सैन्य सत्ता प्रदर्शनकारियों से बहुत सख्ती से निपट रही है। एक आकलन के अनुसार इस विरोध के कारण अब तक म्यांमार के 500 से अधिक नागरिक मारे जा चुके है। पश्चिमी देश म्यांमार पर दबाव बना रहे है। उसे आर्थिक एवं अन्य विकास के प्रतिबंधों का डर दिखाया जा रहा है। भारत पर भी उनके इस अभियान में शामिल होने का दबाव है, लेकिन भारत अभी तक न केवल उससे बचने में सफल रहा है, बल्कि अपने हितों को देखते हुए उसने व्यावहारिक रणनीति का परिचय भी दिया है। भारत ने स्पष्ट रूप से कहा है कि म्यांमार में नागरिकों की आकांक्षाओं का ख्याल रखा जाए। साथ ही भारत–म्यांमार में स्थिरता कायम रखने और वहॉ के आंतरिक मामलों में दखल न देने का पक्षधर भी है। यह दोहरी रणनीति भारत के व्यापक हितों के अनुरूप ही है। दरअसल पश्चिम के जो देश लोकतंत्र की दुहाई देकर यह दबाव बढ़ा रहे हैं, उनकी भू–सामरिक स्थिति भारत से अलग है। उनमें से किसी की सीमा म्यांमार से नहीं लगती परंतु भारत उससे सीमा रेखा साझा करता है, जो खासी संवेदनशील भी है। विशेषकर भारत के पूर्वोत्तर में अलगाववाद की चुनौती से निपटने में म्यांमार की सेना ने हमेशा भारत का सहयोग किया है। भारत ने भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावजूद म्यांमार के राजनीतिक नेतृत्व के अलावा सैन्य नेतृत्व के साथ भी अपने संवाद की
धाराएं खुली रखी। चीन को लेकर भी म्यांमार को अपने पाले में रखना भारत के लिए आवश्यक है। इतना ही नहीं भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के लिए म्यांमार भारत का प्रवेश द्वार है। बिम्सटेक में भी म्यांमार की खासी महत्ता है। साथ ही म्यांमार से शरणार्थियों की समस्या को देखते हुए भारत को खासा सतर्क रहना है और इस मामले में वह संयम भी बरत रहा है। स्वाभाविक है कि अपने व्यापक हितों को देखते हुए भारत–म्यांमार को कुपित करने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में म्यांमार को लेकर उसकी यह संतुलित नीति न केवल उचित है, बल्कि उसे उन पश्चिमी देशों को भी समझाना होगा कि वे म्यांमार के खिलाफ कोई सख्त कदम उठाने से परहेज कर कोई मध्यमार्ग निकालने का प्रयत्न करे। म्यांमार पर पश्चिमी प्रतिबंधों का यही परिणाम होगा कि उस पर चीन का प्रभाव और बढ़ेगा।

देश के पूर्वी हिस्से से धुर दक्षिण का रूख करें तो श्रीलंका में इस समय स्थिरता तो कायम है, लेकिन उसका अतीत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

वर्तमान में भी पीछा नहीं छोड़ रहा। उसके छींटे भारत पर भी पड़ रहे हैं। बीतें दिनों संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में युद्ध अपराधों को लेकर श्रीलंका पर आए एक प्रस्ताव से भारत ने अनुपस्थित रहना ही मुनासिब समझा। देश में एक वर्ग ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। सरकार पर तमिलों के साथ विश्वासघात के आरोप तक लगाए गए। ऐसे आरोप लगाने वाले भूल गए कि श्रीलंका के साथ भारत के द्विपक्षीय सम्बन्धों का एक अहम आधार इस पड़ोसी देश का वह अनुच्छेद 13 ही है, जिसमें श्रीलंका सरकार को तमिल सहित देश के अन्य अल्पसंख्यकों के व्यापक अधिकारों को सुरक्षित रखना सुनिश्चित करना है। ऐसे में हालिया मामले में श्रीलंका का परोक्ष समर्थन कर भारत सरकार ने राष्ट्रहित में ही कदम उठाया है, क्योंकि हिंद महासागर में श्रीलंका जैसा साथी हमारे लिए अत्यंत उपयोगी एवं अहम है। इससे भारत श्रीलंका को यह संदेश देने में सफल रहा है कि घरेलू राजनीति के जोखिमों की परवाह किए बिना भी वह मित्रों की मदद में पीछे नहीं रहता।

वास्तव में राष्ट्रहित में जुड़े ऐसे मामलों पर राजनीतिक वर्ग में एक असहमति होनी चाहिए, लेकिन अफसोस कि ऐसा नहीं हो सका। श्रीलंका को लेकर तमिलों के मसलें और प्रधानमंत्री की हालिया बांग्लादेश यात्रा को भी संकीर्ण राजनीतिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया। इससे राष्ट्र के दीर्घकालिक हितों को ही अघात पहुँचता है। अच्छी बात यह रही कि मोदी सरकार ने ऐसे दबावों को दरकिनार करते हुए व्यावहारिक विदेश नीति की राह पर चलने को वरीयता दी। अफगानिस्तान और पाकिस्तान को लेकर उसके नजरिये में भी यह झलकता है।

दुनिया के दिग्गज देशों की विदेश नीति के विषय में यह बात एकदम सही है कि उनकी इस नीति में सरकारों के बदलने के साथ बहुत बदलाव देखने को नहीं मिलतें। हालांकि भारत में यह रूझान कुछ बदला है। वैश्विक शक्ति अनुक्रम में ऊपर बढ़ते किसी देश के लिए ऐसा बदलाव बहुत स्वाभाविक भी है। भारतीय विदेश नीति में आए इस बदलाव के तत्व को विदेष मंत्री एस जयशंकर ने करीब एक साल पहले अपने एक भाषण में व्यक्त करने के साथ ही हल में अपनी किताब में भी रेखांकित किया है। जयशंकर का कहना है कि अब कहीं अधिक आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारत एक बदलाव के मुहाने पर खड़ा है। इसमें उन्होंने यह दलील भी दी कि ऐसा देश जो एक दिन दुनिया की बड़ी शक्ति बनने की हसरत रखता हो, वह विवादित सीमाओं विखंडित क्षेत्र और अवसरों को पर्याप्त रूप से न भुना पाने की स्थिति को कायम नहीं रख सकता। कुल मिलाकर बदलते वैश्विक परिदृश्य में हम ठहरे हुए नहीं रह सकते। जयशंकर का यह भाषण अब एक केंद्रीय बिंदु बन गया है। सामरिक विश्लेषकों की एक बिरादरी जो भारतीय विदेश नीति में निरंतरता एवं उसकी उपयोगिता की बखान करते नहीं थकती, वह दो–टुक लहजे में कहते हैं कि विगत सात दशकों में भारतीय विदेश नीति का बहीखाता मिली–जुली तस्वीर ही दिखाता है। हालांकि चीन उसे कड़ी चुनौती प्रस्तुत कर रहा है फिर भी भारत दिन–प्रति–दिन अपनी स्थिति सुदृढ़ कर रहा है। अब आने वाले समय में अफगानिस्तान से अमेरिका के पलायन के बाद भारत को एक साथ आन्तरिक और बाह्य चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन अफगानिस्तान से भारत ने जिस प्रकार से अपने नागरिकों को निकाला उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी में चुनौतियों के समय में भारत की विदेश नीति एक सकारात्मक छवि प्रस्तुत करती दिखाई दे रही है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी में भारतीय विदेश नीति ने राष्ट्र की सशक्त छवी प्रस्तुत की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देवी, डॉ. सीमा, और राजेश कुमार, "भारतीय विदेश नीति एक अवलोकन नेहरू से मोदी तक", वर्ल्ड फोकस, जनवरी 2021, पृष्ठ–82.
2. चौधरी, डॉ अनिल एम., डॉ दिपिका अनिल चौधरी, "भरत सरकार की विदेश नीति", इशिका पब्लिशिंग हाऊस, जपयुर, दिल्ली, 2017, पृष्ठ–1.
3. देवी, डॉ. सीमा, और राजेश कुमार, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ–86.
4. वही, पृष्ठ–87.
5. कंबोज, प्रोफेसर अनिल, "भारत की विदेश निति अैर चुनौतियां", वर्ल्ड फोकस, दिसंबर 2015, पृष्ठ–5.
6. वही, पृष्ठ–6.
7. पंत, हर्ष वी, "व्यावहारिक रूप लेती विदेश नीति", दैनिक जागरण, 2 अप्रैल 2021, पृष्ठ– 8.
8. पंत, हर्ष वी, "वैचारिक बैसाखियों से मुक्त होती विदेश नीति", दैनिक जागरण, 30 अक्टूबर 2020 पृष्ठ–10.

*****